

14
57



धर्मरत्न बजाचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 75

गुरुपुत्र

1195

युवर्ष

गी

ॐ नमः श्रीसर्वबुद्धवाधिसत्त्वस्य
नाथे ॥ नमः ॥ शुभं कुरु
येकसमयगृहकृतकथा
श्रीबुद्धनाथ ॥ वाधि
कथासुखसाधमहावक्तव्यागिण्य



॥ नमः श्रीरुग्गवसे आर्यपुत्रायामि
निगमिविजयसादा ॥ शुभं म
गरुडविजयवधमधारीग १
सत्त्वसमययामहाकूलदव
चमहादवक्तव्या ॥ दृढयावमहापृथिः

वीदवक्तव्यादावीसाचमहादवक्तव्या ॥ चवसुम्वारिमहादवक्तारिबुद्धकदवनागयकवाक
सगन्धर्वसुवगवृत्तिकित्तव
नन्दारुगवन्ममदवाचक ॥
गवानाद ॥ गाथाहिरुनन्त्र
मिष्टिगं ॥ शुद्धपूविजयस्कृष्टवाधिसत्त्वारुमपूचनिदानं सगुवाङ्मयसर्वपुत्रमारुममिदं ॥

दि

कलागमिन्नयव(लनगम्रीत्रवपयत्रोक्त(लन॥दग्गादिद्रुचकसृष्वृद्धमधिज्ञानमधिद्विगं॥
जुक्तासुवाउ॥पूर्वस्मिदकिः॥(लवन्नकुरुता॥यथिः॥मायासमिमाउरुउरुयड
नृत्तिस्वत्र॥गंयवश्चास्यधि॥द्वनंमांगल्यदगनारु॥मं॥सर्वपायविनासार्थस
वर्षायक्यंकव॥सर्वसोख्य॥यदाकावंसर्व३॥खवि॥नागनं॥मलसर्वरुनत्व
सर्वशीसमलंकनं॥उपदगतिरियायदिसत्त्वानद्यादगायव॥अलकायविविद्यादिदव

मासपत्रांमूखा॥कानकयायडनानिद्रा॥कूदम्बादिषयदुगा॥पत्रस्यवविवृद्धावाअथनाः
येवृयदुगा॥(माकायाम॥यनर्थत्रयवसनचः॥वत्र॥गदनकुरुपीजयांकाः
खाददावृक्षगदं॥यायः॥कंपग्यकसप्र(माकाः॥याससमृद्धिगं॥कनसस्त्रान
युविना(मगवांसुगुमुरु॥मं॥गृध्रनियरुदंसुगं॥गम्रीत्रंवृद्ध(मावत्रंमामनस्का
॥यसन्नास्या॥युवित्रमुत्रलंकना॥कषांसर्वकथानित्यमवसगा॥सूदावृत्ता॥कजसावास्यसुः

वि

[illegible]

ल्यकादीलि॥ गृह्यनि॥ दं सृगं यवा न्यथा वयनिच॥ यक विदन् माद नयव पजा कवा निदि॥ गप
 जिगारु विषा निश्च न के ४ क
 के ४ पृष्ठा सन्ध मय र्थ नम संः
 सितां॥ पृष्टी गारु विषा नि
 ल्ये स्रथे वच॥ श्री कृष्ण वच पाठ्य स गन्ध अल पावने ॥ मेरु विरुं समूह्य यपूजित यम नन्दिये ॥

दा॥ यावद्दगकगलसकर्मपथं समादाययन्॥ तावन्निरुगवता लोडनमाध्यासिकं वाद्यानि वस्तु
 निस्तानां यविसकानि॥ अन्तः
 सत्त्वाः सन्नयिनाः ॥ पाणवान्न
 नसिकावशमाभा॥ वदियन्
 पुर्विरुमरुवन्वेदुर्यमयमभकदियवत्तपुण्यं कथागरविशददियाकिका नैनगन्धनरु

ग॥ समेवीयमान्मवृधि
 नलाजनन॥ अथरुस्य
 पांचिकांचिकयमानः

वास्त्रिमर्दयावृद्धिना ॥
 पूर्वसवृद्धान्मृत्तिमः
 सगृहं विपुसविस्तीर्णमः

५

टा॥ कस्मिंश्च गृहं वरुदिगिचत्वा विदियावत्तमयान्मनानि पादरु गात्तरुवन॥ कषवासनवृ
 दियानि पय्यकानि दिव्यवः
 स्तिमनस्त्रक्राणस्तथागरु ॥
 रुक ॥ पश्चिमनामिकायुक्त
 गरु ॥ पादरु ॥ समस्तवपादरुगा आसनवृद्धारुगवन्मृत्सिंहसमवृ॥ अथ तादववाः

तद्दययुगपदृफानि
 पादरुकोदक्रिणनः
 भागरु ॥ पादरु ॥ गरु ॥

पादरुगानि वरुवृक्षापूव
 वत्तकुरुत्तागरु ॥ पाद
 उरुथदृदृतिस्ववस्तथाः

ऊरुदंमदानगवंसदनावरुनासिनरुदंवरुवा॥ यावरुसादसुमदासादससाकवाकुं॥
 यावत्समन्तासुदगसुदिदुः गंगानदीवातिकासमा नाकवागव रुनावरुसेः
 नरुदोवरुवृष्टिद्यानिवपु ष्यानिषावृष्टिद्यानिव रुथानिषवाद्यत्त॥ स
 चिवास्मिन्नि सादसुमदासादः सुनाकवागोसत्वावृक्षा नरुगवदिवसुखनसमः
 नागनावरुवृ॥ जातुनाथसत्वावृष्यानिपुष्पनि॥ वधिवथसत्वा॥ सत्वावृ॥ गद्वानिगुः

ग

ध्वनि॥ उत्तरकाथसत्वा॥ स्मृतिंयमिलरु नविक्रिफचिरुथस्मृतिमनावरुवृ॥ नग्राथसत्वाथी
 वनपावृणावरुवृ॥ डिद्यत्ति नाथसत्वा॥ पत्रिपुर्णुगा यावरुवृ॥ रुपिनाथस
 त्वाविगकरुषुवरुवृ॥ याग स्पृष्टाथसत्वाविगक यागावरुवृ॥ दीनकाः
 याथसत्वा॥ पत्रिपुर्णुन्द्रिया वरुवृ॥ विरुथमव रुनासाथीरुनवस्मितां
 साकपाइरुवावरुवृ॥ अथवृचिवकडुवाधिसत्वास्मान्चक्षुर्गवगादृष्ट्वाथयथाकावरुवृकथः

या

भक्तदिगि॥ संसृष्ट उदय आरु मना ४ यमदिन ४ योकि सोमनस्य जागायन नव द्वा र ग व न क रु नां
ऊर्लियल मा का व न रु नां व द्वा र
न स्म व मा (क्ष) र ग व न ४ गाय
य मान ४ स्ति ना व रु व ॥ क थः
रु मा यूप मा लं य द्वा गी गि व र्णा लि ॥ अथ ख लू न व द्वा र ग व न ४ स्त ना ४ सं प जा ना सं वृ चि

ग व ना ४ न स्म व मा (क्ष)
मून वा य ४ य मा ल सं ग
म न स्ति भ क य रु ग व

र ग व न ४ गाय मून गु ला
य पा फ रु नां चि नां चि नः
न ४ गाय मून व वं प यी

१

व व र्त्त क रुं वा धि स त्व म न द वा व र्त्त ॥ ० ॥ मा लं क ल पू र्ण वं चि न य वं प यी गं रु ग व न ४ गाय
य मून वा य ४ य मा लं ॥ क रु
क ला क स मा व क स व रु क स
स म र्थ ४ स्त रु ग व न ४ गाय मून
व द य वा न क का ठि रि ४ स्त य यि त्वा रु थ ग ना न रु न ४ स म्प रुं व द्वा ॥ स म न न वा द रु ग व न व द्वा

स्व द ना ॥ न र व क ल पूः
ग म न वा रु नि का यांः
न रु थ ग रु स्त य ४ य मा

रु गं स म न प गा म ४ स द व
स द व मा नू पा स वा यां य ४
रं प र्थ न स धि ग नुं ॥ या

३

रुगवद्रिगभागमायू४यसाक्षनिर्दण॥ अथमावदुद्धान्तावनकासावचवावृणावचवायदवपु
 का४सत्तिपकिगा४॥ यावत्ताला
 विसत्तकादिनियुगगकसदः
 मकाआसंन॥ अथकमभागः
 साक्षनिर्दगंगा थारिवराषन्॥ जलापुष्टुवपुसवपूगयनेगलयिहुंविन्दुरि॥ ननुगायकसूनवा

यकगन्धर्वसूउकित
 आनि॥ कस्मिन्त्रिविक
 गा४सर्ववकि४पेर्षदा

वसदावगाअनकानिववा
 नावाधिसत्तस्यगृदसमा
 रुगवकगायकसूनवायू४य

८

यू४गयंगलयिहुंकनचिन्॥ सभवपवसाक्षनिर्दत्तागयंगवसख्याया॥ ननुगायकसूनवायू४गयंग
 लायिहुंकचिन्॥ या४काः
 हुंसर्वाचननुवायूजिनसः
 तुगायकसूनवायू४गयंगल
 वा॥ प्रथमिश्चसंवृद्ध४सख्याकानदिलस्यक४॥ यस्माद्वकावलाकस्यकथेवक्षीयपस्यो॥ विवग४

वित्पिथी४सन्नियाव
 वे॥ आकागंयदिवाकः
 यिहुंकचिन्॥ प्ररुकानि

न४यवसाक्षव४॥ गयंगलयि
 धिदिक्स्थिथिहुंकचिन्॥ न
 वकल्यानिकल्याकादिगोनि

५

पापदिंसायावद्भूदकं चरुजनं ॥ यस्मात्कृष्णमहात्मस्य आयुः संख्या न लभ्यते ॥ चरुका निचकल्यानि
 संख्यायावत्कथेवच ॥ कस्मात् ॥ किं समयसादिमा किञ्चि ॥ त्रुसंगयं ॥ नडिनस्यायुः प
 यन्नेकचित्संख्यायत्तस्यः ॥ क ॥ अथखसूगस्मिंसम ॥ यमरुपेदि जात्रायवाकवत् ॥ त
 पापकोटिनामवाद्भूद ॥ जनकेवाद्भूदसदसी ॥ सार्द्धरुगवत् ॥ पूजाकर्मकृत्वा
 कथागुरुसमहायविनिर्वाण गद्यं कृत्वा सदसात्कृत्वा यरुगवत्कथयत्त ॥ शान्तिपत्ररुगवत्कथयत्तमाह ॥

॥ ० ॥ सचरुकिलरुगवान् सर्वसत्त्वान्कंयकामदाकात्रुनिकादिकेषी सर्वसत्त्वानां मातापिरुद्ररु ॥
 अ ॥ जसमसमरुद्रकथयुववा ॥ नाककथामहापुरुषाह्ना ॥ नसूर्यसमईक ॥ अदित्वं
 सर्वसत्त्वानां वाद्भूदं स्वसन्मय ॥ सिमधकं ववेददिरुग ॥ वांरुषीरुनादरु ॥ अथव
 दानरुगावनरुस्योपेदि सर्व ॥ सत्त्वपियदगेनानाम ॥ सिताविक्रमावकस्यपनि
 रानसूर्यत्वं स जात्रायवाकवत्त कोटिनां वाद्भूदमवमाह ॥ किं नूत्वं महावाद्भूदरुगवत्कथयत्त

७१

वयं यावसि॥ अदं न व वंद दामि॥ वा द्रु ह आद॥ अदं सस्मि मलि त्सा वि कु मा व रु ग व रु ४ पू जा यः
रु ना य रु ग व रु ४ स र्प य रु ल मा नु षाः मा नु षा रु मि क्क मि निः व दि रुं व रुं वा रु म रि य या
उ ना ये नं स र्प य रु ल मा नु षाः रु म रि पू ज यि त्ता रि द मा धि प र्ण ज स न रु मि॥ १०
न वं ग य रु ॥ रु नं त्वं लि त्सा विः कु मा व स व रुं य रु साः रु म स रुं ड वि रु यं स र्प य
व क प र्ण क वृ द्धानां ना दृ गे ल रु ह य रु ४ स म न्वा ग रु ४ कि ल स व रुं य रु सा रु म स रुं य रु व यि य मि॥

न वं ग लि त्सा वि कु मा व ड वि रु यं ड व न्वा थं स व रुं य रु सा रु म स रुं अ सा क म कं य रु न रु णि का
नां वा द्रु ह स र्प मा नु षा रुं क रुं क व रु क नि क्रि य वान्॥ अ दं न व वं या थ य न स त्याः
क्रि य म व रु द मा धि प र्ण य मि ला रि ना रु वि य नि ॥ त्वं कि ल रु लि त्सा वि कु मा
व स र्प य रु ल मा नु षा रुं क रुं क रुं ग रु सा या रि रुं॥ वा रु क ल रु क नि क्रि य व दिः
रु स स र्प स त्या नां रि द मा धि प र्ण व रु ल रुं की रु न ॥ न वं म या व रु लि त्सा वि कु मा व दा रुं॥ अ थ

७१

सर्वसाकपियदगनानासलित्तविक्रमानावायव्याकवहकोधित्यवाद्गङ्गाथारित्रधरायत॥ यः
दायागुस्मगंगायागदयः॥ सुमानिवा॥ वक्रः॥ काका
किता॥ उन्मत्तासुरुलंदया॥ नाखड्गुत्रथासुमः॥ रुविषानि॥ गंखवर्धुश्रका
तुरुविषानि॥ यदाकच्यः॥ सोमानापावः॥ सूरः॥ नदासर्षपमावः॥ यकंवा ११
एकदावातुरुविषानि॥ यदासगकपादानासप्लासमनारुवत्॥ दृष्ट्यापयेकमीचनदावातु

रुविषानि॥ यदातीफूमदानाथदनाजायनिपातुता॥ उलोकांनादिसर्ववांनदावातुरुविषानि॥
यदागगविषाएननिः॥ गीसूदंरुवत्॥ स्वर्गसा
कि॥ नानिः॥ यदीयदावृक्ष
विषानि॥ यदासयद्यटपी
वातुरुविषानि॥ यदागियापसंपत्तागदरासूखिनारुवत्॥ कगलंनृत्तमनयूनदावातुरुविः

अ
ह
दि

वसमयदवी गयन नसगना पियविषया गसूचकं संप्रददर्श ॥

॥ कथथा सुनोद न्ना त्याग नं चक्रिय

मानं यय १ क पातथा व काः

१ पुनिल ममाना सुही

माजवं १ धनना दिय माना १ ॥

अथ दवी रूमिकं पाद्रुसु

ददया सदसापतिविः

वृक्षचिन्नाय नावहवा ॥ किमः

याहूत भगीजलनिधिवसना

कंपतिरुगं सूर्य १ सुनीनः

त्रग्नि १ ॥ मसचक्र चं स्रह्कां वयः

निवाड १ खं कृत्तु निमलो आत्र कि १ ॥ वनयनं स्वसुनं चिश्नी व ॥ सुस्तिभन्या नूतां वन विवत्र मिदं कुी उनाथः

१५२

गगाना ॥ अथेवं चिन्तयन्त्या १ ॥ र्गोच संजान ददया पविश दवानि वदयामास ॥ दवी कृमा वय त्रिजा काः

१ कृमा वमन्त्र सन्का ॥ नष्ट गुर्य

१ ॥ कृपू पूरु दग शवभा ३

दवी संकं पित ददया वाषा कुसन

यन वदना राजानमरिग म्मा

वाचा ॥ दवन द्वा मयिय स

न १ ॥ गुर्य १ ॥ वाजा पिसं कं पित द

दय १ यत्र मसं रुम मापद ॥ दा

कष्टं वियू का सिं म्का सि

पिय सुनना ॥ ॥ अथ वाजा

दवी मास्वा सया मास ॥ माही दवी पूजा र्थं वयं कृमा वान्धव लायल रुक १ ॥ कृपू पूरु कृमा वान्धव भाहिद रुः

अ
द्वि

जनकाय॥ ॥ अथ विवाहव्याजोददर्शद्वयवर्गवर्गकर्मोपायकृमावोदृष्ट्यावाजाववीन॥ नमो आस
ह नो कृमावो ननु स च॥ दाक
हं॥ हवमिसूतविशगयाइ
वममपगमावाथनडीवनि
वकवरीशरुसत्रमवाव॥ यदि ननयानुयस हववर्गववनवयकसमाश्रयविष्टा॥ कसद्वदयासमाः

१७३

समस्तनीयः स कर्मनयायदवेनिकनीयसमस्त॥ नयावागनयावाजावेनत्यविष्टकमात्सुकः कृमावोय
विष्टकमिसा॥ कदात्रकः क
युक्तनात्वाइदगनवदनोः
मिसमिथयत्रमरुमंयत्रिः
टिनंनुसमस्तमिवा॥ ॥ अथ नो कृमावो विरुप्रलभं वृत्तान्तं निवदयामास उ॥ सदृशवर्गववनवाः

जादवीपत्रिऊनाथमादमूयगना॥मादपुखागनाथकनूलाकेसुवंगुदमानासुंदगमलिऊगु॥ ॥

अथजादवीचगान्यस्की
गविकीकुट्टिद्धावादन०००
सुंदइद्धागलिवमसयचंदः

निजयगनवृधिवमानः
दुमादुमोनियमिनी॥न
नापंकवाहादवाथगती

सायत्रिनिदि(गविदिगथक
न०युवादिन०सुचिवंगामवः
चंपुद्धादयोमासा॥ ॥अ

156

थसुचिवात्संरुमपसरावाजात्तायकनूगंविलत्ताप॥हाकसंपूककमनात्रमदगनीया॥मृत्वावमंगीद्यमू

पगनामिसुत्तापसमभवदिवागन॥विनाकपत्रंसमरुविष्यनिद०रुमनरु॥दवीचमादान्यगनापकीकु

कगीवाद्गुमूत्रकातयनी
वनसुवत्ताकनलीवनसुग
यंघमाधवलीनसदिविषकी

सुत्तापूक०००मत्ताधव
वकाकनूगंनोदिनि॥हा
सु०गकममयुविथनना

सासुसयत्रिवरुमानामदिषाः
कान्कपियसूककनवजसुत्ता
गनाय०पूजाभनयनमनादत्रं

पयद्धा॥हाकिंगतीवमिदुअयनयनाहिवासंपग्थाभियसूकवत्रंनिदुगंयथिया॥सुचदयमयल्पायं

मयेनं प्रिग्यासनमवक्त्रना विरुदं ॥ दायेन त्यायकं सप्ररुसंयस्त्रिन्दयमयकथिदगिनः ४ प्राक्तवदोक्तः
 नोदुं दशत्वाय मेयियसूताना गंगन ४ ॥ गीयु मन ४ सल्य भनायदनायत्येव ४ ४ मन्त्रयो
 कपाकेमिहिरि ४ ॥ साभयमिहिरि वात्मके ४ पवित्रताचका दनामन्त्रना ॥ ॥ अथनाः १५५
 जादेवी च वद्रविधं कवृगक वृक्षपविद्वन ४ ससर्वा ववमानवमूचा मदनाउनका
 यनसाई पूरुसगवीत्र पूजां दत्वा नस्मिन् विवोयदलसूत्रनुमययेत्यस्य सानिगवीनामि ॥ स्यात्तु

सूपूनवानन्दान्य ४ सूनका सननन समयमदा सत्यानाम वाऊकुमाया इत्तु ॥ नेवदद्वयं ॥ ॥ नत्कस्य
 दना ॥ ॥ ॥ वदंसनकाः सननन समथनमदा सः खानाम वाऊकुमाया इत्तु ॥ नदा
 यिमयानन्द वागद्वषभादा पविमूकननत्रकादिहिरि थदः ४ ४ ४ ययाऊगदनूष्टही
 नं ॥ किं खलूपूनविदानीं सर्व दाषापगनन सम्यक् द्वनमि ॥ नवंदिन के कस्य सत्य
 सार्थकलं समूदयं नव कपूवाजानि संसावा विमोचययं ॥ खलु सत्यसायेथऊगत्याविष्टहीनं इच्छनमन

७
२
५

नितवनम (वा) उरुगो वा ऊ कुमा यो मदाय धा दसुथा मदाय वशा न काय संक मिता य व वा यो सुदुर्वला गयिका ॥
वा यो सुगो द द्वा प्रवित्र लिः ॥ फांगानिक गालि चर्ममा ॥ कुंघ्र वृष्ण मव कीर्ण पतिना निद
द्वा वा यत्कि शिः सा तुं रसा ॥ पतिनें ध व नी यं प ग्ग नि ॥ ३ उरुगो नृय सुगो संमृद्धि को दि ॥ १२१
ननु यनु नि व व नी यं न द्रम ॥ नासू च पा गु व आ लि फः ॥ गा ग्रा ॥ स्म गो द्रिय विदो न मूद
चिहा वा ॥ ग वां च या य य क गू षा स वा द मान लभ का को ॥ सं वं नि न ऊ स ना स्मि ता द्वा द व थ कु न्ध क्षा न सिं ॥

पतिनमा नृ धसा न ऊ भ विप्रिया ग म दोषी च ॥ य ग्ग नि मी ग न रि ॥ वा ऊ कुला न ग ना सुख प विष्ट का या ॥ ना र्णा
रुना र्णां क्री व प नू रं य ग वः ॥ न्य व ले ॥ सर्वा रु म स्या दि ॥ सु वि रि वि व रि य मा ना यि अ नि ल
क यू यु द्ध द या पू व वि या गारु ॥ (ग) क ग व वि द्वा ॥ उ य सं ॥ कु मि त्वा नृ य निं सु दी न म न सा रि
(ग) कं सं न फा क वृ ध स्व वं वा ॥ दि नि ॥ वा ह्वा र्थ म दा व थ सी ॥ वा वा च न ॥ गृ म म नृ य न न व न्दः
(ग) का गि ना म म द अ न ग नी वं ॥ ३ उ र्णा र्णां रु न मू खा र्णां क्रा व म य मू क म वि व धा ॥ सु वि रि वि वां ग मं गं यी च नि ॥

ग्यादानिममदयं च यथायादगं निमित्तं न ह्यय ४ यथा मिदं न यीयसुतां यूनं भविष्यति ददादि समः
 जीवितं क्रमं कृत्वा ४ स्वप्नाम यादृष्टं सुयोममकथानसु तानि ॥ यास्य कृती यमदं कथानः
 सुते पियनायं च (गानसुयः) पुविष्ट ॥ (गाननायदं कथानकं च ॥ स्वप्ना नयच समः
 ४ दृगं (गानं) पुविष्टं ददय सिं ॥ अतिदाद (गानकः) चिंतामत्र हं सम रुविष्मतिनः
 विप्रक्षयपूजाक्षम विजय दद स्वसमजीवितं रुवांस कायूथं ॥ एव मू द्वायमदिषी समूह नियत निरुतः

११८

धनवीथ ॥ सुगीय पविदीना विनष्ट विरुचि संरुमना ॥ सर्वान् ४ पूत्रगणा अकयू भं सत्रं यादमाना ४ वृन्द
 न ४ दृष्टानामयमदीर्घा ॥ स मूर्च्छितयतिनां च कुरुधव वीथसमन्त्र (गाना) काका पूरुविः
 या (गाना) सागसा वा ऊरुधाः मात्यापमका डिहार्थं ना ४ कृमावा ॥ सर्वान् गानाः
 ऊनाना गमुददीना लिना ४ ॥ कथगगना अशुमूखाः यादमाना ४ ॥ पृच्छनिय (थेव) कंम
 मदासत्वं किं विना वा कगन ४ सायनं मदासत्वं ४ किं दृष्ट्य मद्रं मयमना ॥ सत्त्वदर्शनियमना पंन विप्रक्ष

विनष्टशंसां स (ग) कवदनभयया कि विषयसिंदा प्रलतिदना क वा अनन माया सकलानि द्याव ॥ वाजा
 मदासुखत्वाय वादमानः (ग) कार्त्तिक ॥ सिंवनिगति लभवे ॥ अग्रमदीर्घा च व्रती
 यपननीमिश्रति ॥ उदकम यावत्सुनिनसरा ॥ उः ल्यायपृष्ठि वंदीनमानसा कि १ गत
 समयूनादिमता जीवन्ति ॥ वाजामदावथ आदमदी वाचव भवं च दिमि विदिभाः
 सुअमात्यपार्षथा डिह्लासार्थगता कृमागामं मात्वमनिदीनमानसारुवादिन्यासि (ग) क द्वादशा ॥ चवंस

दावथ थक्रमापयित्वा नदाय मदीच कंथ ॥ निबुभवा ऊकलाभा य शुमखा वादमान ॥ (ग) कार्त्तिक ॥ अः
 मात्यगलपविवृत ॥ सूदीनमन साधदीन चक्रथ निबुभाः नगत्रयूत्रता डिह्लासार्थयः
 वाजायूनां वक्रयमा ॥ ले ॥ गतम दमा ॥ शुमखा वादमाना भवन्ति ॥ निर्गकंद द्वा वाजा
 नं वा ह्लास पृष्ठ ॥ ४ समन वद्धा ॥ समनन च निबुभा वा जा समदावथ ॥ समनन ३
 वारिय पूवक वदगनार्थपुक्रनिदिगां सु (ग) सनय नाद द्वा न्यत वं प्र वृषं मुखि नशी पद्मा ॥ स

मननवनिष्काभात्राजसमदावथ४समननवार्थियपूवकत्रवदभनार्थियकनिदिगतांमू (आसन
यनादृष्टान्नगप्रपूवमूतिः
मूखं श्रदमानागच्छन्दावृक्ष
श्रदमान४स्तिभाकुद्ववाथक
न॥ ॥उपसंखमनयनवाह॥मदावथसाश्रवसिंस॥मा (आ कविरुत्सं॥रुवनयननिष्टनिनपू
तगीर्षश्चविविन्नसिफाङ्ग
(आकार्कसवाहमदाव
न्यक्त४॥अथान्नममाः
पाङ्गनासिकगतीतं॥अथ
थसादृष्टासू४अथमूखाः १६०
यस्त्वमागतगीयमवाचः

श्र४यियमनाया॥नवित्रभागम्य००द नवअनिक॥उम्भसित्वंपूववमनायं॥मूद्रकमावमनिगः
म॥माहृदितीयामागुज्राः
जानमिदमववीदिति॥द्वोच
वपूववशानदृग्धन॥नयय
वायोचपूवामपहकुका मां॥नवांमदासत्त्ववत्रकमाशमदानककावृधवलंजभत्वा॥वा (मी चत्वायविधिः
गगुरुन४॥वजावकी (मु
नयूकीमदानयन्दुतिष्ठः
आमदासत्त्वअनिरागाया
मसवमुपादृगशासायमूखावा
न४ (आकानससंयदीकी॥नकसू
४॥दृष्टाववायोमवित्रपसगा

मदावांसर्वाश्चमत्तानिदवाप्रयिथा॥नंवाविगसीममदात्रमिद्धाअनागरुधनिअदंसुगयो॥यनिभासदा
सत्तागिनिगटाकुसाएकि
स्ववगिपंकुनवाऊपूवं॥न
निरुधधप्रणीयविनरुचिः
वृत्तास्ववशदमानागाका

नायाय्याकृषादिनाया॥
वंचयत्तासवव॥सुधागं
रुशागाकागिभापेकलि

मृदुर्कनिर्मानकृत॥सअंगवा
संमृद्धिभावाजामदात्रथथा॥य
नंसुदावृक्षाजुमात्तपाषाक

१७१

रुसिंचनितकसनसर्वस्मिन्कृवाकृषसकन्दमाना॥नृतीयामास्थान्यमः

युवीन॥दृष्टोसयायउलोकुमात्रोसमृद्धिनीनरुमदावनमिं॥यनिनीधवन्धांरविनरुचिनीअस्मादित्रः
दकनचसिंचिनीनि॥यावन्मृतिं
कृत्तिरुनियकनिरुमो॥कृत्
वर्धुमदीवनचदागवसा॥सथ
(गाकयचिरु॥गाकयविद्ध॥यत्रिदवयित्वाचवंदिगाजायत्रिदवयनि॥चकथमयूयिथामनाम॥य

नसयून॥स्मिन्दि॥जाः
नासययत्रिदवयनिः
ववाजाहदिदीनचिरु॥य

दीपययनिदिगथकमु॥मः
नावर्द्धवाकृसनरुंस्मिदनि
रुविशामासुविद्रिफचिरु॥ः

स्म अति द्वावन वा कसन मा भू मो अत्र च दोदिय मो (भा) काग्निना जीवित मं क्रयं व ऊरु ॥ यन्न नदं गी सुवु ऊ यं रनु य गय य पू गो पिय द ग नो ॥ यं ॥ मा च य मा तु विज न तु का यं ॥ न जी विरु ना स रु न वि या गं ॥ ३ तुं ॥ द द्वा व य पू गो सु र वां म मा द क नू णा स्व वं कु न्दि न आ रु मा ण ॥ जा जा यि न त्पू रु द य गृ दी त्वा य भा द मा ना	मो ॥ गी धु ण या न न व वा ऊ (भा) काग्निना न द्दु न यं स्फू ट वा जा यि त्वा म त्प ग (न) न माः	धा नी य वे ग य दा ऊ कू ला न न गी न य पू गो च द द्वा न ला स न सा नि ॥ ३२ द्दो दि पा रि वृ ष ग न न कु द गि
---	--	---

पिपू वा व जि त्वा सा गी धु गी धुं च व मा ण नू पा द वी अ द म त्पू नं पू रु का मा ॥ अ दं च स ग्गा य म नि रु धा ग न १ पू ३ र्व स त्त्व व वा व रु व ॥ पू रु श वा सु द्वा द ना दि व न पा थि व न्द्राः वी मा म दा य णा द रु थ भे नी या मा व रु न ॥ या यी अ रु रु नु म दा य जा य नी या यी सु ना पं च क अ मी दि रि क्का ॥ द यो सु ना वि षा नि आ सी रु ॥	ह्ना दि म दा स त्त्व व थ सा य म दा व (थ) ना म व रु व वाः रु ना ॥ म दा द व अ सी द थ	ने व वा यी स खि ना रु ना सी रु ॥ ३ आ ॥ म दि षी च आ सी द व मा य द वा ऊ यू गो म रु इ यी व रु दी व रुः
--	---	--

॥ अथ महावाजा महादवी च वरुवित्रक नृणां पवित्रं वनं कृत्याम वा रुद्राणां वम च मदा ऊन कायनः
 सार्द्धं युवसां गत्री यजूं कृत्या अस्मिं पदं गतं स मदा सु त्वसां म गत्री ययुगि श्रयिनाः
 ॥ अयं स पत्रमय सुय ४ न वृत्तं च मदा सत्यं न असा वा यो अत्ता रा वं पवित्रं कं ॥ ७३३
 वं यं येषु निधानं कृत्याः कृतं ॥ ७७ म म यो गत्री वः सय विदमना इना गतं व गतः
 नामे मति का न्ते ४ क ॥ ४ सर्व सत्त्वानां वृद्ध कार्यं च कात्रिणा ॥ अस्मिं पदं गति दिग्ध मा न अय म यानां सत्त्वाः ॥

नां स द व मानुषिकाया ४ यजा या अनू क या यां स म्मा कं वा (ओत्रि कं) उत्थादिनं ॥ अयं च द रुद्र यं प न ये धा असा सु
 पसा द नि द ग न ना या धा स चः सृणा वृद्धा वि दान न ग र्हे वान्धे न म नू पा फ ७७ मि ॥
 ॥ ७७ ति गी सु व र्णु य र्ग मा रु म म ग न्द वा ऊ वा खी यः वि व क्ता ना मा न विं ग नि ॥ ७७ ॥
 न म ४ ॥ अथ खलु गानि अ न का नि वा वि सत्त्व ग न स द्मा धि य न स व र्णु वः
 त्वा क ॥ ७७ ॥ व र्णु क र्णु थ ग न र्णु ना य सं का न्ता ४ ॥ उ य सं क म्म ग स स व र्णु व त्ना क व र्णु क र्णु

पण्डितविमर्शमां ॥ ॥ अथ खलु प्रविश कर्तुं विमर्श उक्ताया मनाद कागमरुद्रासंगं यावत्प्रित्वा दक्रिबं जानुः
 मधुसं पृथिव्यां यमिहा यमनरुग वां रुना पुं लिं यम माय त्वाः कसां वलायामिमां लिगाथा लि
 प्रहिरु वित्ता ॥ सत्तं मनीन्द्र गनपूः धास क व स द स शी वा वृयु लेत्र सं क रं ॥ उदात्र व लु व वः १३५
 मोम द गन ॥ स द स ग मि वि व य स न अ न क व मि क ल न क स स प रं ॥ वि वि ग व ला क स व ल
 स क व नी ला व द ना प व का श्र ना रु वे दू य ना मा व स टिका रं ॥ नि र स न व उ मि व द प च न न प य वि ला सा ॥

विमर्श न क टा रि श ॥ प सी द म स न्द्र प व लु रान ना ॥ प र प म स ल स र वा व प्र वि ति ॥ प स ल व लु न्द्रि य वा व द ग
 न श क य वृ य उ न कान् वृ य ॥ अ व व लु वि व ज वि वा ज म ॥ य ले व स वं ज म ला क स प रं
 वि उ द्ध का वृ य गु ले व सं क रं ॥ स मा न मे नी व ल य ग्ग स चि नं वि वि ग य लु व न वा अ न वि
 नां ॥ स मा वि वा य क गु ले वः सं क रं ॥ न या रि य द्वा द क वी स र वं क वी गु र क वं स च स
 र वा क ला ग मं ॥ वि वि ग ग री व गु ले व सं क रं ॥ वि वा व स क व स द स का नि ष ॥ वि वा उ म लं य म मि वि वां गु ॥

लि० यथा कलं स्तंग गल क म लु सं म व र्य था स व यु ले व य न ॥ सं द ग्ध स स च वि ता क वा रु ष ॥ ग म क्री व गं ख कू म
 द न्द्र सं नि रा ॥ ४ ॥ य षा व य द्वा रा
 वि व रा न जी कं ॥ न्द्र सो म्मा वः
 व लू म नि ना रू व मि रि वि वा
 धा ग र रु व प वि व रू नि म विं ग नि न म ॥ ४ ॥

सृ पा शु व य द ना व लि स्त
 कू न्द्र म्मा न श स्ति गं य द
 व र सूर्य न्द्र न जी क ॥ ३ ॥

मू ख मा वि वा क ग ॥ स डा उ दं मः
 क्रि षा व रु स कू लु सी नं ॥ वे डू र्य १७७
 ॥ ॐ निस र्व नेः
 ॐ निस र्व नेः

समुच्चयाना सकु स दे व ना द्द द्दु क्ष न र्णा व ला या मि मा रि ग्मा रि र्ग व नं रु र्द्व ॥ १ ॥ न मा मु व द्वा यः
 सृ वि शु द्ध वा व य ॥ वि शु द्ध वः
 ना य म वि शु द्ध व द्ध य ॥ अः
 अ द्वा अ द्वा व द्ध म न न्द्र ग म वः
 ग न ॥ ग म कू ल क रु न व रु सूर्य य न द्द गं रा वि न स कू म कू मं ॥ स च ष स त्वा न अ नू ग द्वा र्थि गान् क म्म व ४ ग म कू म

मी प नि र्ग न व द्ध य स द्ध न
 हा अ द्वा व द्ध म न न्द्र न उः
 वं डा इ च वं पू षा मि वा नि द्द

पू षा य ग नान व द्ध य ॥ रु वा य शु
 सं अ द्वा अ द्वा सा ग व म नू रु र्य ॥ ३ ॥
 र्ग ॥ अ द्वा अ द्वा का नू नि क रु थ

七十四

[illegible]

गवानामनासु च वाधिसन्तावाधिसन्तः
 मुखामात्रसर्वावनीपषट्सु
 मुखारुगतना रुधिरमस्यः
 आयसूतसूयलासाकमसु
 यधिसमापुः ॥ ७० ॥

समन्त्रयाकृतदवनासवसनीमहादवीपु
 वगवठकिन्नवमहावगादिय
 नन्दनिनि ॥ ७१ ॥
 रुन्दुमाजः ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥ यधमादिदुपलावा ॥ ७४ ॥

७५

पांरुथागनासु च दक्षिणं श्रुयानिवाधः ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥ नयाससम
 ॥ ७७ ॥ मासमानद
 ॥ ७८ ॥ असुत्रं वनक्रुः शुधियाग्या ॥
 मि सवृत्तविर्तनवनासिचन्द्रमसि ॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥ चवम्मादीमहाशुतलं ॥ ८१ ॥
 नवय ॥ ८२ ॥ नव नव नव ॥
 गावतसुवृत्तक्रु ॥ ८३ ॥ दिवायादि
 ॥ ८४ ॥ वृत्तसुनिवायः ककटवाः
 दिनः संपूर्णमखिकेदिनं ॥ ८५ ॥

८६

सांख्य ॥ ६ ॥ अथाथ यं पुनः ॥ इति भाष्यं ॥ नदीयते ॥ अदिष्टं मयि ॥ सांख्यं नदीयते ॥
 ॥ यम्यं नाना ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥ कृत्वा यम्यं नाना ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥
 नदीयते ॥ मदीयते ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥ कृत्वा यम्यं नाना ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥
 यम्यं नाना ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥ कृत्वा यम्यं नाना ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥
 सखि ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥ कृत्वा यम्यं नाना ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥
 सांख्यं नदीयते ॥ मदीयते ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥ कृत्वा यम्यं नाना ॥ अनाया ॥ असूयावति ॥ ॥ श्रीन ॥

[illegible]

Suvarnaprabhāṣā

790

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH75

